chapter-4

अध्याय-४

' रघुवंश दीपक ' का वस्तु विन्यास

अध्याय-४

रघुवंश दीपक का वस्तु-विन्यास

प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य की कथावस्तु ऐसे इतिहास प्रसिद्ध उच्च कुलोद्भव उदात्त चरित्र वाले लोकप्रिय नायक से संबंधित होती है जिसकी महान् कृतियाँ, विजय यात्राओं और साहसपूर्ण कार्यों मेंजातीय भावनाओं, महात्वाकांक्षाओं औरआदर्शों का प्रकाशन होता है। उसके द्वारा जातीय, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता है। प्रसिद्ध समालोचक डा० गुलाबराय ने ठीक ही कहा है कि महाकाव्य जाति की सांस्कृतिक चेतना के धोतक होते हैं, अत: उनका कवि भी महाकाव्य के नायक की भांति ही स्वयं सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बन जाता है। १ हमारा आलोच्य ग्रन्थ 'रघुवंश दीपक' एक ऐसा हीमहाकाव्य है जिसकी कथावस्तु का संबंध भारतीय वांङ्मय को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले उस नायक से है जिसके उदात्त एवं गौरवपूर्ण चरित्र की कल्पना सर्वप्रथम आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने की थी और जो गोस्वामी तुलसीदास जैसे महान् प्रतिभा सम्पन्न कवि का वर्ण्य विषय बनकर भारतीय जन मानस के ही नहीं अपितु विश्व मानव के हृदय-पटल पर छा गया। यह हम पूर्ववर्ती अध्याय में भी लक्ष्य कर आये हैं कि परम्परा से प्राप्त ऐसे उदात्त चरित्र पर आधारित कथावस्तु को 'रघुवंश दीपक' के कवि ने गृहण कर उसे अपनी रुचि एवम् निजी काव्य चेतना के अनुसार समायोजित किया है। कतिपय- परिवर्तनों तथा सम्वर्द्धनों के साथ 'रघुवंश दीपक' की कथावस्तु प्राचीन भारतीय आचार्यों की उस मान्यता का ही प्रतिपादन करती है जिसमें महाकाव्य की कथावस्तु के लिये यह घोषणा की गई है कि वह 'इतिहासोद्भव वृत' २ पर आधारित होती है।

१- डा० गुलाबराय - काव्य के रूप पृष्ठ ६३

२- आचार्य विश्वनाथ - साहित्य दर्पण ६।३१८

रघुवंश दीपक की कथावस्तु तथा उसके प्रबन्ध सगंठन पर विचार करने से पूर्व हमें यह लक्ष्य कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है कि महाकाव्य की कथावस्तु के सबंध में विभिन्न भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य-शास्त्रियों के क्या विचार थे। भारतीय आचार्यों में सर्व-प्रथम भामह आते हैं जिन्होने महाकाव्य की कथा-वस्तु पर विचार करते हुए कहा है कि उसमें अति - व्याख्यारहित जीवन के विविध रूपों, अवस्थाओं और घटनाओं का चित्रण प्रभावान्विति तथा पंच संधियों से युक्त ऋद्धिमत्ता से पूर्ण संघटित कथानक होता है। १ दूसरे प्रसिद्ध भारतीय आचार्य दण्डी ने 'इतिहास कथोद्भूत-मितरद्वा सदाश्रयम ' २ कहकर साथ ही उसे लोकरंजन करने वाला सुसंधियों से युक्त अति व्याख्यारहित सर्गबद्ध होना स्वीकार किया है। ३ आचार्य रुद्रट ने महाकाव्य की कथावस्तु के लिये कहा है कि वह उत्पाद्य अथवा अनुत्पाद्य पद्यबद्ध लम्बी कथा जिसमें प्रसंगानुसार अवान्तर कथायें होती हैं तथा जो समस्त नाटकीयतत्वों से युक्त किसी प्रधान घटना को लेकर समग्र जीवन का चित्र उपस्थित करती हो महाकाव्य की कथा-वस्तु हो सकती है।४ आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार ५ महाकाव्य की कथावस्तु इतिहासोद्भव वृत, सम्पूर्ण नाटक संधियों से युक्त सर्गों में बंधी हुई धीरोदात्त नायक की कथा होती है जो एक ही वंश के एक अथवा कई राजाओं की भी हो सकती है।

भारतीय आचार्यों की कथावस्तु सबंधी उपर्युक्त मान्यताओं का अवलोकन करने के बाद अब हम कतिपय पाश्चात्य विद्वानों की एतद्विषयक मान्यताओं को भी देखना उचित समझते हैं। पाश्चात्य विद्वानों में अरस्तू , सी०एम०बावरा, डब्लू०पी०कर,एबर क्रोम्बी तथा हीगैल ने कथावस्तु सबंधी निम्नांकित विचार व्यक्त किये हैं :-

---

१- भामह - काव्यालंकार १।२१
२-३- दण्डी - काव्यादर्श - १।१५,१८
४- रुद्रट, काव्यालंकार १६।२-१६
५- आचार्य विश्वनाथ- साहित्य दर्पण ६।३१५,३१६,३१७,३१८

१- अरस्तू के अनुसार महाकाव्य की कथावस्तु में पूर्णता और गठन, प्रारम्भ, मध्य और अन्त में उत्तरोत्तर गतिशील होना चाहिए जिससे कि एक जीवधारी के अंग सगंठन के समान उसमें पूर्ण रचना का आभास मिल सके। महाकाव्य की कथावस्तु विस्तृत तथा छन्दोबद्ध होती है जिसमें विचित्र और अलौकिक घटनाओं का वर्णन होता है। अरस्तू ने कार्यान्विति तथा नाटकीयतत्व आवश्यक माने हैं। १

२- सीसम-बावरा- ने कल्पना प्रसूत तथा ऐतिहासिकता पर आधारित कथावस्तु के आधार पर महाकाव्यों को (।) साहित्यिक तथा (।।)ऐतिहासिक दो भागों में विभाजित किया है। इस प्रकार ऐतिहासिकता तथा कल्पना के आधार पर उसने कथावस्तु के दो प्रकार माने हैं। उसके अनुसार महाकाव्य का कथानक वृहदाकार होता है जिसमें महत्वपूर्ण और गरिमायुक्त घटनाओं का वर्णन होता है। २

३- डब्लू०पी०कर- ने महाकाव्य की कथावस्तु मेंसमग्र जीवन के कार्यकलापों का समावेश आवश्यक माना है। ३

४- एवर क्रौम्बी- ने भी महाकाव्य केकथानक को कल्पना प्रसूत तथा इतिहास पर आधारित मानकर उसके (।)साहित्यिक जिसे वह 'लिटरेरी' कहता है तथा (।।) ऐतिहासिक जिसे 'आर्थेन्टक' कहा है, दो भेद किये हैं साथ ही उसने उसे एक पुष्ट,स्पष्ट तथा प्रतीकात्मक उद्देश्य से पूर्ण माना है। ४

५- हीगैल ने महाकाव्य के कथानक को जीवन के अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य के रूप में स्वीकार किया है। उसने विस्तृत कथानक के साथ साथ उसमें महत्व पूर्ण घटनाओं का होना आवश्यक माना है। हीगैल के विचार से महाकाव्य केकथानक को ऐतिहासिक होना आवश्यक है क्योंकि ऐतिहासिकता ही काव्य को महान् बना देती है। ५

१- अरस्तू - दि आर्ट आफ पोयट्री - पृष्ठ ३४
२- सी०एम०बावरा- फ्राम वर्जिल टू मिल्टन- पृष्ठ १६-१७
३- डब्लू ०पी०कर- एपिक एन्ड रोमान्स - पृष्ठ १७
४- एवर क्रौम्बी - दि एपिक पृष्ठ ४१-४२
५- हीगैल - फिलासफी आफ फाइन आर्ट्स चतुर्थ खण्ड पृष्ठ ११५

भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्रियों के महाकाव्य की कथावस्तु संबंधी उपर्युक्त अवधारणाओं पर विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि दोनों में ही पर्याप्त साम्य है। अस्तु दोनों के समन्वित रूप को अब हम इस प्रकार रख सकते हैं -

(१) महाकाव्य की कथावस्तु ऐतिहासिक अथवा कल्पना प्रसूत होती है।

(२) उसमें किसी महान् चरित्र का वर्णन किसी महत् उद्देश्य से प्रेरित होकर किया जाता है ।

(३) सुसंधियों से युक्त पद्यबद्ध कथा जिसमें महत्वपूर्ण और गरिमा युक्त घटनाओं का वर्णन होता है।

महाकाव्य की कथावस्तु संबंधी उपर्युक्त अवधारणाओं के प्रकाश में जब हम 'रघुवंश दीपक' की कथावस्तु पर विचार करते हैं तो हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उसके रचयिता कवि सहजराम जी ने 'रघुवंश दीपक' की रचना में एक प्रख्यात कथा को स्वीकार कर उसमें भारतीय लोक मानस में सर्वाधिक प्रतिष्ठित श्री राम के महच्चरित्र का समकालीन युग सन्दर्भ में एक महदुद्देश्य से प्रेरित होकर चित्रण किया है। 'रघुवंश दीपक' में स्पष्ट ही एक पुष्ट प्रतीकात्मक उद्देश्य भी देखा जा सकता है जो महत्कार्य से युक्त एक सुसंघठित जीवन्त कथानक के माध्यम से सुसंधियों से पुष्ट होता हुआ अनेक महत्वपूर्ण गरिमा युक्त घटनाओं को समेटे हुये दोहा चौपाई तथा अन्य विविध छन्दों की सशक्त काव्य धारा के रूप में अपने गन्तव्य की ओर गतिमान है ।

आचार्यों ने इतिवृत्त की दृष्टि से कथावस्तु के तीन भेद किये हैं १

१- प्रख्यात २- उत्पाद्य ३- मिश्र

इसी प्रकार अधिकारी या नायक के संबंध से भी कथावस्तु को दो

१- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- जायसी ग्रन्थावली पृष्ठ ७२ तथा हिन्दी साहित्य कोश भाग - १ पृष्ठ २०५ ।

वर्गों में विभाजित किया गया है । १ (१) आधिकारिक कथा (२)प्रासंगिक या अवान्तर कथा । पुन: आधिकारिक कथा को भी (१) व्यक्ति प्रधान (२) तथा घटना प्रधान दो भागों मेंविभाजित किया गया है ।

१-प्रख्यात कथावस्तु- इसे अनुत्पाद्य या ऐतिहासिक कथा के नाम से भी पुकारा जाता है। प्रख्यात वृत्त इतिहास पुराणादि से ग्रहण किया जाता है किन्तु इतिहास या पुराण से इतिवृत ग्रहण करके भी कृतिकार उस पर अपनी कल्पना की कूंची फेरता है।पर ऐसा करने में इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाता है कि कल्पना के समावेश से वृत्त की ऐतिहासिकता या पौराणिकता में किसी तरह का विकार न उत्पन्न हो।२

२- उत्पाद्य कथावस्तु - इसे कल्पना प्रसूत भी कहा जाता है जो लेखक की कल्पना द्वारा उत्पन्न होता है। इसमें लेखक स्वतंत्रतापूर्वक अपनी रुचि के अनुकूल कथा की सृष्टि करता है। ३

३- मिश्र कथावस्तु - मिश्र वस्तु के वृत की भूमि तो प्रख्यात होती है पर अनेक कथायें जो उसमें सम्मिलित होती हैं कल्पना प्रसूत होती हैं । ४

जैसा कि इससे पूर्व हम यह कह चुके हैं कि 'रघुवंश दीपक' की कथा वस्तु प्रख्यात है। कवि सहजराम जी ने उस पर कल्पना की कूंची अवश्य फेरी है किन्तु कल्पना के समावेश से वृत की ऐतिहासिकता या पौराणिकता में किसी तरह का विकार नहीं उत्पन्न हुआ क्योंकि जिन कथा प्रसंगों का कवि ने अपनी रुचि के अनुकूल समायोजन किया है वे मूलत: पौराणिक हैं। पूर्ववर्ती पृष्ठों में 'रघुवंश दीपक' की रचना के मूल स्रोतों पर विचार करते समय इस बात की ओर स्पष्ट संकेत किया गया है कि कवि सहजराम जी ने ग्रन्थ की रचना में पूर्ववर्ती काल की प्राय: उन सभी कृतियों से प्राप्त होने वाली सभी प्रकार की उस समस्त सामग्री का निस्संकोच उपयोग किया है जिसके द्वारा

१- डा० श्यामसुन्दर दास-साहित्यालोचन पृष्ठ १४० अष्टम संस्करण तथा हिन्दी साहित्य कोश भाग १ पृष्ठ २०५

२-हिन्दी साहित्य कोश भाग १ पृष्ठ २०५

३- वही पृष्ठ वही

४- वही पृष्ठ वही

सम्भवत: उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहायता मिल सकती थी। हम यह भी लक्ष्य कर चुके हैं कि परम्परा से प्राप्त राम कथा के वस्तु ग्रहण में उन्होंने बड़ी बड़ी सतर्कता से काम लिया है। एक ओर तो उनकी भक्ति पद्धति उन्हें अपनी रुचि के अनुकूल सर्जन की प्रेरणा दे रही थी, तो दूसरी ओर मूल राम कथा के मर्यादापूर्ण आदर्श चरित्र चित्रण से भी वे अत्यधिक प्रभावित थे। इसके साथ ही वे राम के यशोगान, उनकी भक्ति के प्रचार तथा प्रसार के लिये भी कृत संकल्प थे। अस्तु प्रख्यात कोटि की कथावस्तु को ग्रहण करके भी उन्होंने पौराणिक कथा प्रसंगों के सहारे अपने उद्देश्य की पूर्ति की है।

आधिकारिक कथा-

मूल कथा वस्तु को ही आधिकारिक कथा वस्तु कहा जाता है क्योंकि उसका सीधा संबंध अधिकारी या फलभोक्ता जिसे नायक कहते हैं, से होता है। १

इसी आधिकारिक कथावस्तु के दो भेद किये गये हैं जिनमें से एक को व्यक्ति प्रधान तथा दूसरे को घटना प्रधान के नाम से जाना जाता है।

व्यक्ति प्रधान-

व्यक्ति प्रधान आधिकारिक कथावस्तु में कवि की दृष्टि व्यक्ति पर ही होती है। नायक के चरित्र के विकास और उसके जीवन की सारी मुख्य घटनाओं का वर्णन, गौरव वृद्धि तथा गौरव रक्षा की ओर उसका विशेष ध्यान रहता है। २

घटना प्रधान -

घटना प्रधान कथा में कवि का सारा वस्तु विन्यास किसी मुख्य कार्य के सम्पादन के लिये किये गये उन सारी घटनाओं के उपक्रम द्वारा होता है, जिनके द्वारा साध्य कार्य के सम्पादन में सहायता मिलती है। प्रत्येक घटना प्रधान प्रबन्ध काव्य का एक कार्य होता है जिसके लिये घटनाओं का सारा आयोजन होता है। ३

१- डा० श्यामसुन्दर दास -साहित्यालोचन पृष्ठ १४० अष्टम संस्करण
२- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - जायसी ग्रन्थावली पृष्ठ ७३ पंचम संस्करण
३- वही पृष्ठ -७३

'रघुवंश दीपक' की आधिकारिक कथावस्तु व्यक्ति प्रधान ही है। राम के चरित्र विकास और उनके जीवन को समग्र रूप से चित्रित करने का प्रयास कवि ने किया है। 'रघुवंश दीपक' की रचना किसी विशेष उद्देश्य से प्रेरित होकर की गई थी इस बात की चर्चा हम पूर्व वर्ती पृष्ठों में कर चुके हैं। यहां उसकी पुनरावृत्ति न कर केवल इतना ही संकेत करना पर्याप्त होगा कि भक्ति आन्दोलन से पूर्व राम कथा के गायकों के सम्मुख भले ही रावण वध ही मुख्य कार्य रहा हो किन्तु भक्ति आन्दोलन के पश्चात् इस मुख्य कार्य में परिवर्तन दिखाई देता है। 'रघुवंश दीपक' भक्ति आन्दोलन के पश्चात् की रचना है अत: उसमें रावण वध ही मुख्य कार्य न होकर राम का पावन यशोगान तथा उनकी भक्ति के प्रचार एवं प्रसार तथा युगीन चेतना के सन्दर्भ में राम के महच्चरित्र को उद्घाटित करना था। साथ ही उनके द्वारा किये गये लोक कल्याणकारी कार्यों को सामाजिक एवं जातीय चेतना का सम्बल बनाकर उसमें संघर्ष एवं विजय की महत्वाकांक्षा जागृत करने का उद्देश्य भी निहित था। इसीलिये कवि ने व्यक्ति प्रधान कथानक को ग्रहण कर राम के जन्म से लेकर उनके महाप्रयाण तक की सारी जीवन गाथा को मुख्य घटनाओं से सम्बद्ध कर उन्हें एक साधारण मानव, एक राजकुमार, एक वीर धीर योद्धा लोकप्रिय सम्राट तथा ब्रह्म के साक्षात् विग्रह और अवतार आदि अनेक रूपों में प्रतिष्ठित किया है। एक आदर्श अवद्वतिक प्रजा वत्सल सम्राट तथा शासक के रूप में उनके जीवन के विभिन्न पक्ष तथा आदर्श भारतीय जन नायक के रूप में उनके वैयक्तिक जीवन की मधुर तथा कठोरतम् घड़ियों के चित्र कवि ने मूल कथा के माध्यम से ही प्रस्तुत किये हैं। साथ ही घटनाओं के घात प्रतिघात तथा स्वाभाविक - नियोजन द्वारा जिस महत्कार्य के सम्पादन के लिये नायक श्री राम को प्रयत्नशील दिखाया गया है वह कवि के सफल वस्तु विन्यास की कलात्मक रुचि का परिचायक है।

रघुवंश दीपक की सम्पूर्ण आधिकारिक कथा के चार विभाग किये जा सकते हैं। इनमें से प्रारम्भिक विभाग में राम जन्म से लेकर विवाह तक की कथा तथा द्वितीय विभाग में उनको युवराज पद देने का प्रयास तथा

वन गमन से लेकर सीता हरण तक की कथा । तृतीय विभाग में सीतान्वेषण से रावण वध तथा अयोध्या लौटकर राज्याभिषेक तक की कथा। चतुर्थ तथा औपसंहारिक विभाग में राम राज्य, सीता परित्याग तथा लवकुश जन्म से लेकर राम के महाप्रयाण एवं कुश के अयोध्या के सम्राट होने तक की कथा है। यदि विचार पूर्वक देखा जाये तो इन चारों विभागों में विभक्त रघुवंश दीपक की मूल कथा का प्रत्येक विभाग ही इतना सम्पन्न एवं समृद्ध तथा पर्याप्त है कि उसमें से प्रत्येक पर अलग अलग महाकाव्यों की रचना हो सकती है ।

प्रासंगिक कथावस्तु :

प्रसंगानुकूल आधिकारिक कथावस्तु की सहायता के लिये जिन कथा प्रसंगों की संयोजना की जाती है, उसे ही प्रासंगिक कथा कहते हैं। प्रधान वस्तु के साधक इतिवृत्त को प्रासंगिक वस्तु कहते हैं । १

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रासंगिक कथावस्तु की उपयोगिता पर विचार करते हुये यह बात स्पष्ट रूप से कही है कि प्रासंगिक वस्तु ऐसी ही होनी चाहिये जो आधिकारिक वस्तु की गति को आगे बढ़ाती हो या किसी और मोड़ती हो। २ वस्तुत: प्रासंगिक कथाओं को मूलकथा के प्रवाह के साथ नियंत्रित रखकर ही सफल प्रबन्ध काव्य की रचना सम्भव है अन्यथा यदि प्रासंगिक कथायें स्वतंत्र रूप से, मूल कथा प्रवाह से बाहर जाकर अनियंत्रित हो गईं तो आधिकारिक कथावस्तु में बाधा उत्पन्न हो जाती है और प्रधान नायक के स्थान पर किसी अन्य का ही वृत्त इतना विस्तृत तथा प्रभावशाली हो जाता है कि प्रबन्ध सौष्ठव संकट में पड़ जाता है।

अस्तु रघुवंश दीपक की सम्पूर्ण कथावस्तु पर समग्रत: विचार करने तथा आधिकारिक कथावस्तु केसाथ प्रासंगिक कथाओं के समायोजन में कवि के वस्तु सगंठन तथा विन्यास के कौशल का परीक्षण करने के लिये हमें ग्रन्थ की सर्गबद्ध कथा का सम्यक अनुशीलनआवश्यक प्रतीत होता है।

विभिन्न सूत्रों से अपनी रुचि के अनुकूल कथा के स्वरूप का चयन कर उसकी मौलिकता की पूर्ण रक्षा करते हुए कवि ने 'रघुवंश दीपक' की

१- डा०श्यामसुन्दर दास -साहित्यालोचन पृष्ठ १४१ अष्टम सस्करण
२- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - जायसी ग्रन्थावली पृष्ठ ७६ पंचम सस्करण

कथावस्तु को सात काण्डों में विभाजित किया है जो इसप्रकार हैं :-
(१) बाल काण्ड (२) अयोध्याकाण्ड (३) अरण्यकाण्ड (४) किष्किन्धाकाण्ड
(५) सुन्दरकाण्ड (६) लंका काण्ड (७) उत्तर काण्ड

उपर्युक्त सात काण्डों में फैली हुई समस्त कथावस्तु का परीक्षण हम प्रत्येक काण्ड की आधिकारिक तथा प्रासंगिक कथाओं के समायोजन को दृष्टि में रख कर करेंगे ।

१- बालकाण्ड की कथा

ग्रन्थ का प्रारम्भ बाल काण्ड से होता है जिसमें मंगलाचरण, संत असन्त गुणावगुण वर्णन के पश्चात् ग्रन्थ रचना का काल तथा स्थल का उल्लेख कर मूल कथा के स्त्रोत का संकेत करता हुआ कवि ब्रह्मा- नारद सम्बाद का वर्णन करता है। यहां कवि ने अध्यात्म रामायण की भांति ब्रह्मा नारद तथा शिव पार्वती के सम्वादों से ही सम्पूर्ण कथा को रखकर पौराणिक पद्धति का अनुसरण किया है। नारद के मुख से कलियुग का वर्णन तथा ब्रह्माजी द्वारा उससे त्राण पाने के रूप में श्री राम के यशोगान को ही एकमेव मार्ग बतलाकर वह शिव-पार्वती सम्वाद की रचना करता है। वस्तुत: 'रघुवंश दीपक' की आधिकारिक कथा की प्रस्तावना यहीं से [illegible]। पार्वती द्वारा पूंछे गये प्रश्न के उत्तर में शिव द्वारा कही गई समस्त आधिकारिक कथा को सूत्र रूप में वर्णित कर आठ छन्दों तथा दो दोहों की रचना में ग्रन्थ की सम्पूर्ण कथा का संकेत किया गया है। १

ग्रन्थ के नायक श्री राम के जन्म के कारणों का वर्णन करता हुआ कवि भगवान विष्णु के द्वारपाल जय और विजय द्वारा सनकादि ऋषियों का अपमान उनके द्वारा उन द्वारपालों को शाप देना तथा भगवान विष्णु को अपने द्वारपालों के उद्धार के लिये नर शरीर धारण करने की कथा का वर्णन

१- रघुवंश दीपक-बालकाण्ड दोहा ३३ तथा ३४ के मध्य के छन्द तथा चौपाइयां

कर कवि इसी प्रसंग में ग्रन्थ की सबसे पहली तथा अति विस्तृत प्रह्लाद चरित्र की कथा कहता है। जानकी जन्म कथा, रावण प्रभाव तथा भार पीड़िता पृथ्वी का ब्रह्मा के पास पहुंचना देवताओं सहित ब्रह्मा द्वारा भगवान विष्णु की प्रार्थना करना, भगवान विष्णु का प्रकट होकर भू भार हरण के लिये नर रूप में, दशरथ, कौशल्या के पुत्र बनकर अवतार धारण करने की घोषणा, देवताओं का वानर भालु के भेष में प्रकट होना तथा हनुमान जन्म कथा, उनके बाल्यकाल के शाप एवं सुग्रीव के पासपहुंचने की कथा का विस्तार सहित वर्णन प्रासंगिक कथा के रूप में हनुमान जन्म कथा दूसरी अति विस्तृत कथा है।

उपर्युक्त कथा वर्णन के पश्चात् ही, जिसमें हम आधिकारिक कथा की प्रस्तावना के रूप में ग्रहण कर सकते हैं, एक प्रकार से आधिकारिक कथा आरंभ होती है। यह प्रस्तावना पौराणिक शैली की कही जा सकती है जो प्राय: रामचरित मानस की भांति ही है। इस प्रस्तावना के पश्चात् दशरथ राज्य वैभव वर्णन, श्रवण वध और राजा दशरथ को शाप, पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान तथा उसकी पूर्णता पर अग्नि का प्रकट होकर पायस प्रदान करना, कौशल्या कैकेयी सुमित्रा द्वारा गर्भ धारण, रामजन्म तथा कौशल्या द्वारा उनकी स्तुति भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न जन्म, नामकरण तथा बाल क्रीड़ा वर्णन, भगवान शंकर का अयोध्या आगमन तथा राम के द्वारा कतिपय चमत्कार प्रदर्शन जिनमें अज मंत्री को नेत्रदान, विश्वावसु गन्धर्व आदि की कई कथायें आती हैं। चारों भाइयों की किशोरावस्था का वर्णन, राम केवट मिलना, विश्वामित्र का अवध आगमन तथा राम लक्ष्मण के लिये याचना, राजा दशरथ का मोह वर्णन तथा विश्वामित्र को राम लक्ष्मण का यज्ञ रक्षार्थ देना, विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण को विद्यादान, ताड़का वध, यज्ञ का प्रारम्भ तथा सुबाहु आदि राक्षसों का वध, विश्वामित्र के साथ राम व लक्ष्मण का जनकपुर के लिये प्रस्थान, मार्ग में गंगा जन्म कथा तथा तप वर्णन, सिन्धु मन्थन तथा चौदह रत्नों के प्रकट होने की कथा, मोहिनी रूप में विष्णु का प्रकट होकर अमृत वितरण, अहिल्या जन्म विवाह तथा शाप एवम् उद्धार कथा, विश्वामित्र सहित

राम लक्ष्मण का जनकपुर पहुंचना तथा नगर वर्णन, विश्वामित्र जनक संवाद सीताजी की दासी द्वारा श्रीराम के रूप सौन्दर्य का वर्णन, पुष्पवाटिका प्रसंग तथा राम सीता की प्रथम भेंट, जानकीजी द्वारा पार्वती पूजन तथा वर याचना, राम लक्ष्मण का धनुष यज्ञ शाला में आगमन, सीता का रंगभूमि में पदार्पण तथा वन्दी जनों द्वारा जनक के प्रण की घोषणा, राजाओं द्वारा धनुष तोड़ने का प्रयत्न तथा उनकी असफलता पर जनक का विषाद, रावण का अपने पुरोहित द्वारा जनक को सन्देश, श्रीराम द्वारा धनुष भंग तथा सीता का जयमाल पहनाना, जनक द्वारा भेजे गये सन्देश से राजा दशरथ का बारात सहित जनकपुर आगमन, राम का सभी भाइयों सहित विवाह बारात विदा तथा मार्ग में परशुराम भेंट, संवाद तथा प्रस्थान, बारात का अयोध्या आगमन तथा लौकिक रीतियों का वर्णन करते हुये राम सीता रास वर्णन के साथ बालकाण्ड की कथा समाप्त होती है।

समीक्षा :

बालकाण्ड की इसविस्तृत कथा में आधिकारिक कथा के साथ साथ कतिपय प्रासंगिक कथायें भी बड़े विस्तार के साथ मिलती हैं जिनमें प्रह्लाद चरित्र हनुमान जन्म कथा, श्रवण वध, विश्वावसु गंधर्व की कथा, गंगा जन्म कथा, सिन्धु मन्थन तथा चौदह रत्नों का प्राकट्य एवं भगवान विष्णु का मोहिनी रूप धारणकर अमृत वितरण मुख्य प्रासंगिक कथायें हैं। राम केवट मिलन, अज मंत्री को नेत्रदान तथा बालक रूप में श्रीराम का भगवान शंकर के सम्मुख एवं अन्य स्थलों पर चमत्कार प्रदर्शन छोटी छोटी प्रासंगिक कथायें हैं। 'प्रह्लाद चरित्र' तथा 'हनुमान जन्म कथा' के अति विस्तृत होने के कारण आधिकारिक कथावस्तु के साथ उनका समायोजन उचित ढंग से नहीं हो पाया और वे अपने विशाल कलेवर में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करती हुई प्रतीत होती हैं। रसात्मक तथा भावपूर्ण होते हुये भी इन कथाओं के स्वतंत्र अस्तित्व के कारण आधिकारिक कथावस्तु के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होगई है। इसी प्रकार गंगा जन्म, सिन्धु मन्थन तथा उससे संबंधित अन्य प्रसंग

अति विस्तृत होने के कारण मूल आधिकारिक कथा को न तो गति प्रदान करते हैं और न उसे कोई नया मोड़ ही। इन प्रसंगों को सरलता से छोड़ा जा सकता था। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने पौराणिक साहित्य के ज्ञान प्रदर्शन अथवा पौराणिक कथाओं की विस्तृत जानकारी को पाठकों के सम्मुख रखने के उद्देश्य से ही इन कथाओं के विस्तार में उलझ गया है। यह कथायें ठीक वैसा ही दृश्य उपस्थित करती हैं जिस प्रकार हितोपदेश की कथाओं में एक के भीतर दूसरी कथा की श्रृंखला जुड़ी हुई है।

इन प्रासंगिक कथाओं के समायोजन की एक अन्य संभावना यह भी हो सकती है कि कवि ने श्रीराम के परम ब्रह्मत्व के प्रदर्शित करनेतथा उन्हें अलौकिक सामर्थ्य एवम् सचराचर नायक के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के एकमेव नियन्ता सिद्ध करने के उद्देश्य से इन कथाओं की विस्तृत चर्चा की हो। एक संभावना यह भी हो सकती है कि कवि ने भक्ति केविभिन्न रूप, स्तर तथा उसके व्यापक प्रभाव एवं जन मानस में उसके प्रति दृढ़ आस्था के भाव से प्रेरित होकर भी इन कथाओं की रचना की हो। इनमें प्रह्लाद चरित्र की कथा के संबंध में अवश्य ही कवि के इस दृष्टिकोण को लक्ष्य किया जा सकता है।

आधिकारिक कथा को गति प्रदान करने तथा उसके प्रवाह को आगे बढ़ाने में श्रवण कथा का विस्तृत वर्णन अवश्य ही कवि के नवीन दृष्टि-कोण तथा वस्तु संगठन के कौशल का परिचायक है। इस कथा में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात दिखाई गई है वह है श्रवण के माता पिता के द्वारा दशरथ को पुत्र वियोग में प्राण त्यागने के शाप की बात। निस्संतान दशरथ को जब यह शाप मिलता है कि " जिसप्रकार मैं सुत वियोग में अपने प्राण दे रहा हूं उसी प्रकार तुम्हें भी अपने प्राण त्यागने पड़े १ तो दशरथ को सन्ताप अथवा दुख के स्थान पर सुख की अनुभूति होती है। २ क्योंकि शाप

१-साधु सुजान सुशील कुमारा। मातु पिता सेवक तुम मारा।
तासु वियोगकर्मों तनु जैसे। नरपति तजहुं प्राण तुम तैसे।
(रघुवंश दीपक बालकाण्ड)

२-नाथ कीन्ह मैं बड़ अपराधू। तुम अति दीन दयानिधि साधू।
मुनिवर सुखद श्राप मोहि दीन्हा।हमारे जान अनुग्रह कीन्हा।।
(वही)

वरदान के रूप में उन्हें पुत्र की प्राप्ति का सन्देशा दे रहा था। शाप रूप में प्राप्त उस सन्देश के कारण ही दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं और उसके परिणाम स्वरूप ही उन्हें चार पुत्रों की प्राप्ति होती है। वस्तुत: इस कथा के द्वारा 'रघुवंश दीपक' की कथा को गति मिलती है और वह आधिकारिक कथा को नया मोड़ देकर आगे बढ़ाती है तथा पाठक के मन में आगे की कथा के लिये उत्सुकता उत्पन्न करती है।

पात्रों के चारित्रिक विकास के लिये सहजराम जी ने जिन प्रासंगिक कथाओं की समायोजना आधिकारिक कथावस्तु के साथ की है उनमें विश्वावसु गन्धर्व की कथा विशेष महत्त्व पूर्ण है। कवि ने 'रघुवंश दीपक' में कैकेयी के चरित्र में जो नवीनता प्रस्तुत करने का प्रयास किया है उसके लिये ही विश्वावसु गंधर्व की कथा को उसने मूल कथा के साथ जोड़ दिया है। राम के वन गमन में कैकेयी ही केवल दोषी नहीं थी, अपितु अन्य कई परिस्थितियों का वह परिणाम था इसका उल्लेख रघुवंश दीपक में इस कथा के माध्यम से किया गया है।

बालकाण्ड की कथा में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रसंग जो कवि सहजराम जी की सर्वथा स्वतंत्र कल्पना प्रतीत होती है वह है राम-सीता का विहार तथा दाम्पत्य रास केलि वर्णन। जैसा कि हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में इस बात की ओर संकेत कर चुके हैं कि कवि अपनी वैयक्तिक भक्ति-साधना में रसिक भावना की भक्ति का राम भक्त था, यहां हम उसकी कथावस्तु संगठन की कुशलता पर केवल इतना ही कहना चाहेंगे कि सहजरामजी ने अपनी रसिक भावना की भक्ति की परितुष्टि के लिये ही एक अत्यन्त मनोरम तथा भावपूर्ण रसात्मक प्रसंग की रचना इतने स्वाभाविक ढंग से की है कि वह न तो ऊपर से थोपा हुआ लगता है और न इसके कारण पाठक को मूल कथा प्रवाह से बाहर जाने की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रसंग की सोद्देश्य कल्पना कवि के कथा शिल्प तथा वस्तु संगठन की कलात्मक प्रतिभा का परिचय देती है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि -

१- 'रघुवंश दीपक' की बालकाण्ड की कथा में वह स्वाभाविक प्रवाह

नहीं है जो एक प्रबन्ध काव्य के लिये अपेक्षित होता है। प्रासंगिक कथाओं की भरमार तथा उनके अति विस्तृत कलेवर से वे व्यर्थ ही उबा देने वाले कथा प्रसंग बनकर रह जाते हैं। और आधिकारिक कथा के साथ उनका योग ~~जोड़~~ स्वाभाविक न लगकर ऊपर से थोपा हुआ दिखाई देता है। वस्तुतः

१- बालकाण्ड की कतिपय प्रासंगिक कथाओं को छोड़कर शेष अन्य कथाओं से आधिकारिक कथावस्तु को न तो गति मिलती है और न उसे कोई नया मोड़ ही। समग्रत: हम यह कह सकते हैं कि बालकाण्ड की प्रासंगिक कथाओं के समायोजन में कवि वस्तु संगठन की दृष्टि से सफल नहीं हो सका।

२- अयोध्या काण्ड की कथा

अयोध्या काण्ड की कथा का प्रारम्भ राम के विवाहोत्सव से होता है। अन्य बरातियों के सहित अयोध्या वासी आनन्दोल्लास में मग्न हो दशरथ के भाग्य की सराहना करते हैं। बरात के आये हुए भरत के मामा युधाजित को विदा करते समय उनके साथ ही भरत तथा शत्रुघ्न को भी विद्याध्ययन के लिये भेजने का प्रसंग प्रस्तुत कर कवि ने बड़ी कुशलता से इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि भरत तथा शत्रुघ्न ननिहाल क्यों कर गये थे तथा दशरथ जी के द्वारा राम को युवराज पद देने के निर्णय के समय वे अयोध्या में क्यों नहीं थे। रामचरित मानस में भरत के ननिहालवास का कारण अज्ञात ही रह जाता है किन्तु रघुवंश दीपक के कवि ने उसे स्पष्ट कर दिया है इस प्रसंग के पश्चात् ही कवि राम के शौर्य, उदात्तता, धैर्य तथा प्रजापालन के लिये उचित उन गुणों की परीक्षा का प्रसंग उत्पन्न करता है जो एक सुयोग्य युवराज के लिये आवश्यक होते हैं। एक सिंह के द्वारा एक ब्राह्मण की गौ का वध हो जाता है जिसकी रक्षा के लिये ब्राह्मण पुकारता है। श्रीराम के द्वारा उस सिंह का यद्यपि वध हो जाता है किन्तु ब्राह्मण अपनी मृत गाय की प्राप्ति के लिये ही हठ करता है। श्रीराम उसे प्रथम तो समझा बुझाकर शान्त करना चाहते हैं किन्तु ब्राह्मण के हठ पर वे उसे विमान पर बिठाकर गौ की प्राप्ति के लिये विभिन्न लोकों में लक्ष्मण सहित जाते हैं। विभिन्न लोकों में श्रीराम के ही रूप को देखकर ब्राह्मण को उनके ईश्वरत्व

का ज्ञान होता है तथा कवि भी विभिन्न रूपों में विभिन्न लोकों में निवास करने वाली महाशक्तियों का श्रीराम से अभेद्य संबंध स्थापित कर रघुवंश दीपक के चरित नायक राम को परात्परं ब्रह्म का ही रूप निर्धारित कर सकने में पूर्ण सफल हो जाता है। १ इसी अवसर पर वह पुन: रसिक भावना की साधना पद्धति विश्वासों एवं राम के स्वरूप निर्धारण का भी अवसर प्राप्त कर लेता है। इन प्रसंगों की मनोरम भूमि पर ही मूल कथा का प्रवाह आगे बढ़ता है और मुकुर में अपना प्रतिबिम्ब देखकर महाराजा दशरथ को अपनी वृद्धावस्था का ज्ञान होता है। कर्तव्यनिष्ठ राजा दशरथ गुरु की आज्ञा से राम को युवराज पद देने का विचार करते हैं। राज तिलक की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती हैं। सुरपति इन्द्र द्वारा प्रेरित तथा ब्रह्मा के द्वारा निर्देशित देवर्षि नारद राम के समीप आकर उन्हें अपने संकल्प की याद दिलाते हैं और रावण वध के लिये अयोध्या का राज छोड़कर वन गमन के लिये कहते हैं । राम द्वारा स्वीकृति मिलते ही देवराज इन्द्र शारदा को अवधपुरी भेज कर मंथरा की बुद्धि में विकार उत्पन्न करवा कर कैकेयी द्वारा राम वन गमन के लिये राजा दशरथ से हठपूर्वक अपने वरदानों की पूर्ति का ऐतिहासिक प्रसंग उपस्थित होता है। सत्यव्रती राजा दशरथ के वचनों के पालन के लिये श्रीराम सहर्ष वन जाना स्वीकार करलेते हैं और लक्ष्मण तथा सीता सहित वन के लिये प्रस्थित हो जाते हैं । राम के वियोग में अयोध्या के नगरवासियों के दारुण शोक तथा उनके प्रति अगाध स्नेह का प्रभावपूर्ण वर्णन करता हुआ कवि अपनी भावुकता का पूर्ण परिचय देता है तथा महाकाव्योचित मार्मिक स्थलों के सजीव चित्रण में पूर्णत: तल्लीन हो जात ा है। इसी प्रवाह में गुहराज से भेंट, राम केवट संवाद तथा गंगा पार करना, प्रयागराज आगमन तथा भारद्वाज आश्रम पर चित्रकूट महात्म्य वर्णन, वन मार्ग में मार्गवासियों के प्रेम का सजीव वर्णन तथा वाल्मीकि आश्रम पर श्रीराम का पहुंचना, वाल्मीकि द्वारा राम निकेत का वर्णन तथा

१- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा ३ तथा १३ के मध्य की कथा ।

चित्रकूट में निवास करने का सुझाव देना, चित्रकूट में पर्णकुटी की रचना कर श्रीराम का लक्ष्मण तथा सीता सहित निवास; सुमन्त का अयोध्या लौटना तथा दशरथ का तन त्याग, रानियों का विलाप तथा वशिष्ठ द्वारा उन्हें समझाना, भरत के पास दूत भेजना तथा उनका अयोध्या आगमन, कैकेयी, भरत-सम्वाद, राजा दशरथ की अन्त्येष्टि क्रिया, वशिष्ठ कौशल्या माता तथा राज समाज द्वारा भरत को राज्य ग्रहण करने का आग्रह तथा भरत की ग्लानि एवं मनोदशा का चित्रण एवं श्रीराम के पास चित्रकूट जाने का संकल्प, समस्त माताओं, गुरु तथा राज समाज सहित भरत का चित्रकूट प्रस्थान तथा मार्ग में भरत की दशा का वर्णन, गुहराज का क्रोध तथा भरत मिलन, भरद्वाज आश्रम में भरत का आगमन, अतिथि-सत्कार तथा वहां से भरत का चित्रकूट के लिये प्रस्थान, राम-लक्ष्मण सम्वाद तथा भरत के आगमन की सूचना पर लक्ष्मण का क्रोध, भरत गुह सम्वाद, चित्रकूट पहुंचने पर भरत की मनोदशा का वर्णन तथा राम भरत मिलन, श्रीराम लक्ष्मण जानकी का माताओं पुरवासियों से भेंट, भरत तथा पुरवासियों सहित समाज का एकत्रित होकर राम-भरत संवाद, भरत की प्रीति-ज्ञान-वैराग्य का वर्णन, इन्द्र का दुखी होना तथा उसका निवारण, भरत विनय तथा मार्कण्डेय कथा वर्णन, कैकेयी कुमति निवारण तथा राम की स्तुति, राम का भरत को समझाना तथा पादुका देकर समस्त पुरवासियों सहित अयोध्या वापस भेजना, भरत का अवध आगमन, गुरु वशिष्ठ एवं जनक की सम्मति से सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था करना, भरत का नन्दिग्राम में निवास तथा सयंम सहित जीवन व्यतीत करने आदि की कथाएं कही गई हैं।

समीक्षा:

अयोध्या काण्ड की सम्पूर्ण कथा में आधिकारिक कथा का ही विस्तार मिलता है जिसे शुद्ध इतिवृत्त कहा जा सकता है। प्रारम्भ में केवल एक तथा अन्त में भी एक ही प्रासंगिक कथा का समावेश किया गया है। प्रारम्भ की प्रासंगिक कथा का विवेचन पिछली पंक्तियों में किया जा चुका है जिसमें राम के चारित्रिक उत्कर्ष उनके शौर्य, धैर्य तथा संकल्प

निष्ठा एवं प्रजा वत्सलता के महत्त्व पूर्ण गुणों के उद्‌घाटन के लिये ही उक्त कथा की रचना का उद्देश्य प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त राम के परम ब्रह्मत्त्व की प्रतिष्ठा के लिये उनके विभिन्न रूपों में निवास करने तथा विभिन्न महाशक्तियों के साथ एकात्म स्थापित करने के लिये भी इस कथा की संयोजना की गई है। जिसमें रसिक भावना की भक्ति के अनुरूप ब्रह्म के स्वरूप तथा उसकी स्थिति की सैद्धान्तिक विवेचन का अवसर प्राप्त किया गया है। अन्तिम कथा मार्कण्डेय जन्म कथा है जिसका वर्णन भरत के द्वारा राम के ईश्वरत्त्व तथा अपने भक्तों की रुचि रखने के लिये विभिन्न युक्तियों द्वारा अपने प्रण की रक्षा करने का वर्णन किया गया है। इन दोनों ही कथाओं से मुख्य कथा में कोई बाधा नहीं उपस्थित होती वरन् नायक तथा किसी मुख्य पात्र (भरत) के चारित्रिक उत्कर्ष की महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है।

निष्कर्ष :

यद्यपि बालकाण्ड की तुलना में अयोध्या काण्ड की कथा उतनी विस्तृत नहीं है और न ही उसमें उतनी प्रासंगिक कथाओं की संयोजना ही मिलती है तथापि इस कथा से कवि की महाकाव्योचित काव्य प्रतिभा तथा उसके द्वारा संयोजित रस-संवेदना का प्रभावकारी रूप एवं कवि की तूलिका में समाहित उदात्त चरित्रांकन की अपरिमेय शक्ति जिसके द्वारा भरत जैसे महान व्यक्तित्व सम्पन्न चरित्र का चित्रांकन हो सका, का परिचय मिलता है। रघुवंश दीपक की समूची राम कथा में यदि राम के चरित्र से कोई होड़ ले सकता है तो वह है भरत का चरित्र जो इसी अयोध्या काण्ड की कथावस्तु से ही प्रकट होता है दिखाई देता है। भरत को ही हम अयोध्याकाण्ड की इस सम्पूर्ण कथा का नेतृत्व करते हुये पाते हैं। इस प्रयास में सहजरामजी ~~कर~~ अपने प्रेरणास्पद कवि गोस्वामी तुलसी दास जी से प्रभावित ~~होने की~~ हैं।

३- अरण्य काण्ड की कथा

अरण्य काण्ड का प्रारम्भ श्री राम के चित्रकूट छोड़ने की इच्छा के उल्लेख

से होता है। वे स्फटिक शिला पर निवास करने के लिये चल देते हैं और वहीं कवि ने एक ऐसी काल्पनिक घटना का उल्लेख किया है जिसमें कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का श्रीराम से मिलन दिखाया गया है और उनका भी चित्रकूट छोड़कर बर्हिष्मती नगर को प्रस्थान कर जाना दिखाया गया है। इस घटना का उल्लेख अवश्य ही कथा के मूल प्रवाह से अलग सा दिखाई देता है क्योंकि इसकी संगति कहीं नहीं बैठती। उसके बाद ही इन्द्र पुत्र जयन्त की दुष्टता तथा उसको दण्ड देना। श्रीराम का अनुसुइया का तप बल वर्णन तथा अत्रि के आश्रम में राम, लक्ष्मण ,सीता का आगमन, अत्रि द्वारा राम की प्रार्थना, अनुसुइया द्वारा पातिव्रत धर्म तथा यमराज व सत्यवती कथा वर्णन, दण्डक वन श्राप कथा, विराध वध तथा उसकी पूर्व कथा, शरभंग आश्रम आगमन उनका शरीर त्याग, पंचशर महिमा तथा श्रीराम द्वारा निश्चर नाश की प्रतिज्ञा। सुतीक्षण आश्रम आगमन, सम्वाद व प्रार्थना,सुतीक्षण सहित अगस्त आश्रम आगमन, मुनि द्वारा राम की प्रार्थना तथा ईश्वर जीव भेद। पंचवटी गमन तथा पर्णकुटी रचना व राम-लक्ष्मण संवाद। भक्ति ,ज्ञान तथा वैराग्य संबंधी वार्ता । शूर्पणखा नासिका कान निपात, खरदूषण त्रिशरा वध, शूर्पणखा का रावण के पास जाना तथा रावण द्वारा सीता हरण की योजना, मारीच वध तथा सीताहरण, रावण जटायु युद्ध, श्रीराम का मारीचि वध कर पर्णकुटी आगमन व सीता वियोग वर्णन, जटायू से भेंट तथा उसका उद्धार, कबन्ध वध कथा, शबरी आश्रम आगमन तथा उसका आतिथ्य ,पम्पासर वर्णन, प्रकाश मुनि के आश्रम आगमन तथा संवाद । नाम महिमा तथा ज्ञान, भक्ति व पारलौकिक वार्ता व प्रकाश मुनि द्वारा विनती वर्णन ।

समीक्षा :

कलेवर में छोटा होते हुए भी अरण्य काण्ड घटनाओं से पूर्ण है । इतिवृत्तात्मकता का प्राधान्य होने के साथ ही दार्शनिक तत्वों के चिंतन तथा विभिन्न साधना पद्धतियों के दर्शन भी इस काण्ड क में मिलते हैं । ईश्वर ७ जीव, भक्ति-ज्ञान वैराग्य,कर्म, जप तथा संयम,नियम आदि के

विवेचन का अवसर भी कवि ने इस काण्ड में निकाला है। राम की स्तुति तथा उनसे अनयामनी भक्ति की याचना आदि के ऐसे प्रसंग भी हैं जिनमें राम के ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा तथा उनकी भक्त वत्सलता के चित्र मिलते हैं। घटनाओं के बाहुल्य के कारण अरण्यकाण्ड रघुवंश दीपक में प्रतिपादित महाकाव्योचित वस्तु संगठन को उसके कार्यावस्था में प्रस्तुत कर लक्ष्य की ओर ले जाती हुई गति शीलता प्रदान करता हुआ दिखाई देता है। इसमें पातिव्रत धर्म की महत्ता को सर्व विदित तथा महान भारतीय जीवन दर्शन की उपलब्धि मानकर उस पर कई प्रसंग प्रस्तुत किये गये हैं जिनका संबंध महाकाव्य की नायिका सीता के परमोज्ज्वल सतीत्व तथा पावन चरित्र की पृष्ठभूमि से ही है।

निष्कर्ष :

समग्रत: यह कहा जा सकता है कि अरण्य काण्ड की घटनाओं के घात प्रतिघात से आधिकारिक कथा में गति बनी रहती है और वह अपने गन्तव्य की ओर अनुधावित होती है।

४- किष्किन्धा काण्ड की कथा

किष्किन्धा काण्ड में राम का ऋष्य मूक पर्वत के समीप पहुंचना तथा हनूमान से भेंट, हनूमान द्वारा सुग्रीव एवं राम की मित्रता स्थापित करना, मायावी तथा बालि की कथा, बालि को मतंग ऋषि की शाप कथा, सप्त ताल संहार कथा, सुग्रीव बालि का युद्ध तथा राम द्वारा बालि का वध, बालि राम संवाद तथा बालि का शरीर त्याग, तारा विलाप व सुग्रीव द्वारा बालि की क्रिया करना एवं सुग्रीव का राजतिलक, राम का प्रवर्षण गिरिवास, वर्षा ऋतु व वर्णन, सुग्रीव पर क्रोध तथा लक्ष्मण का पम्पासुर जाना, सुग्रीव द्वारा सीतान्वेषण के लिये बानर सेना को एकत्र करना, बानरों का बल वर्णन तथा सीता की खोज में बानरों का यत्र तत्र जाना, स्वयं प्रभा मिलन व सम्पाति संवाद, बानरों द्वारा समुद्र पार करने का बल वर्णन तथा जामवन्त हनुमान संवाद आदि की कथाएं हैं।

निष्कर्ष :

किष्किन्धा काण्ड में भी घटनाओं का ही बाहुल्य है। अस्तु मूल कथा अपने लक्ष्य की ओर इतिवृत्तात्मकता के आधार पर आगे बढ़ती है। राम के चारित्रिक पक्ष पर भी इन घटनाओं के कारण ही सम्यक् प्रकाश पड़ता है। बालि वध तथा सुग्रीव मैत्री आधिकारिक कथा को नया मोड़ देकर नायक की चारित्रिक महानता को उद्घाटित करती है।

५- सुन्दर काण्ड की कथा

सुन्दर काण्ड की कथा का प्रारम्भ हनूमान के समुद्र सन्तरण की तैयारी से होता है। मार्ग में हनुमान मैनका, सुरसा सवांद तथा सिंहिका वध कर वे समुद्र के उस पार पहुंचते हैं। लंका प्रवेश व लंकिनी सवांद सीताजी की खोज, विभीषण मिलन तथा हनूमान जी का अशोक वाटिका में प्रवेश। रावण द्वारा सीता को त्रास देना, त्रिजटा का स्वप्न वर्णन, हनूमान का मुद्रिका प्रक्षेपण तथा हनूमान जानकी सवांद। हनूमान द्वारा अशोक वाटिका का विध्वंश तथा अक्षयकुमार आदि राक्षसों का वध, मेघनाद हनूमान युद्ध तथा ब्रह्म पाश बन्धन। रावण की सभा में हनूमान की बन्दी रूप में प्रवेश, दशमुख सभा तथा प्रभाव वर्णन, हनूमान रावण सवांद, लंका दहन, देवताओं द्वारा हनूमान की स्तुति, सीताजी के पास हनूमान का लौटना तथा विदाई, हनूमान का समुद्र पार आकर बानरों से भेंट तथा श्रीराम के पास सबका पहुंचना, श्रीराम हनूमान सवांद तथा बानरों सहित लंका के लिये प्रस्थान, समुद्र तट पर प्रवास। रावण मेघनाद सवांद तथा विभीषण त्याग, विभीषण का श्रीराम की शरण में जाना तथा सुग्रीव व राम सवांद एवं विभीषण को लंका का राजा बनाकर तिलक करना, शुक शारन का दूतों के भेष में आना, शुक शारन का लंका लौटकर समाचार देना, श्रीराम का समुद्र की प्रार्थना करना तथा क्रोध, समुद्र का प्रकट होना तथा राम की स्तुति करना, रामेश्वर स्थापना तथा नल नील द्वारा सेतु निर्माण तथा सेना सहित समुद्र पार करना।

समीक्षा :

सुन्दर काण्ड की इस सम्पूर्ण कथा में हनुमान के ही बल-विक्रम, बुद्धि तथा रण कौशल का परिचय दिया गया है। सुन्दर काण्ड में ही कवि ने महाकाव्य के प्रति नायक रावण के वैभव, पराक्रम तथा राज्य व्यवस्था आदि की भी झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं जिससे प्रति नायक के चारित्रिक स्तर का भी संकेत मिलता है। साथ ही मुख्य संघर्ष की विस्तृत जानकारी भी प्राप्त होती है। इसी काण्ड में कवि ने धार्मिक मतवाद के समन्वित रूप का भी उल्लेख किया है। रामेश्वर स्थापना की विस्तृत कथा द्वारा कवि ने शैव तथा वैष्णव सम्प्रदायों के बीच अद्भुत समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है और पुन: राम को ही परम उपास्य एवं परात्पर ब्रह्म के अभेद्य रूप में प्रतिष्ठित किया है।

निष्कर्ष :

सुन्दर काण्ड की कथा में घटनाओं का समायोजन आधिकारिक कथा को गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होता है, साथ ही महाकाव्य के नायक द्वारा कार्य सिद्धि के लिये किये गये प्रयासों का जीवन्त चित्रण है जो वस्तु संगठन की दृष्टि से अत्यन्त सफल कहा जा सकता है।

६- लंका काण्ड की कथा

लंका काण्ड का प्रारम्भ राम का ससैन्य समुद्र पार कर सुबेल पर्वत पर निवास करने की कथा से होता है। रावण द्वारा अपने दूत, शुक,सारन से पृथक पृथक प्रत्येक वानर वीर के बल का वृतान्त प्राप्त करना, सुग्रीव द्वारा रावण के घमण्ड का नाश तथा मुकुट भंग करना, रावण मन्दोदरी संवाद, श्रीराम का वानर वीरों से मंत्रणा करना तथा अंगद को रावण केपास दूत बनाकर भेजना, अंगद का लंका प्रवेश तथा रावण सभा में उपस्थित होना, रावण की सभा तथा उसके प्रभाव का वर्णन, अंगद रावण संवाद, अंगद का रावण की सभा में पदारोपण तथा रावण मान भंगकर

श्रीराम के पास प्रत्यागमन, युद्ध की तैयारी तथा वानर राक्षस युद्ध, माल्यवान रावण संवाद, मेघनाद रावण संवाद तथा मेघनाद द्वारा युद्ध के लिये प्रस्थान, लक्ष्मण मेघनाद युद्ध, लक्ष्मण के शक्ति लगना। श्रीराम का विलाप, सुषेण वैद्य का आगमन तथा शक्ति मोचन के लिये औषधि का नाम बताना, श्रीराम का अपने दल के सभी वीरों का संजीवनी लाने का आह्वान, प्रत्येक वीर द्वारा अपने पराक्रम का उल्लेख, हनुमान का संजीवनी लाने के लिये प्रस्थान तथा मार्ग में कालनेमि भेंट तथा वध, संजीवनी लेकर लौटते समय हनुमान का अयोध्या के ऊपर से निकलना तथा भरत द्वारा उनको बाण से आहत कर पृथ्वी पर गिरा देना, सुमित्रा स्वप्न वर्णन, हनुमान भरत संवाद , हनुमान का संजीवनी लेकर युद्ध भूमि में पहुंचना, वैद्य द्वारा उपचार तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा भंग होना,मेघनाद द्वारा यज्ञ करना तथा युद्ध में नाग फांस से सबको बन्दी बना लेना । मेघनाद द्वारा माया युद्ध तथा सीता को पुष्पक विमान पर बिठाकर माया से राम का वध दिखाना । त्रिजटा का सीता को समझाना, नाग फांस उद्धार तथा मेघनाद की माया का विनाश। लक्ष्मण मेघनाद युद्ध तथा मेघनाद वध। रावण का शोक व सीता को त्रास देना,कुंभकरण को निद्रा से जगाना, उसका युद्ध तथा वध। रावण मन्दोदरी संवाद, रावण का युद्ध के लिये प्रस्थान, राम रावण युद्ध, रावण द्वारा माया युद्ध तथा उसका वध, देवताओं द्वारा श्रीराम की स्तुति, विभीषण तथा मन्दोदरी द्वारा शोक, रावण की अन्त्येष्टि क्रिया। ब्रह्मादिकों द्वारा राम की स्तुति, स्वर्ग से राजा दशरथ का आना तथा राम के साथ संवाद । विभीषण राज्याभिषेक, सीता का श्रीराम के पास आना तथा उनकी अग्नि परीक्षा । विभीषण राम संवाद, पुष्पकारूढ़ हो अयोध्या के लिये प्रस्थान, मार्ग में अंजनी माता से भेंट तथा संवाद। श्रीराम का पुष्पकारूढ़ हो प्रयागराज पहुंचना तथा हनूमान को भरत के पास भेजना ।

समीक्षा :

लंका काण्ड में जो मुख्य कथा के साथ कतिपय महत्वपूर्ण प्रासंगिक

कथायें जुड़ी हुई हैं उनमें सुग्रीव द्वारा रावण के घमण्ड के नाश की कथा, सुमित्रा स्वप्न वर्णन तथा अयोध्या लौटते समय श्रीराम का अंजनी माता से भेंट की कथायें हैं। इन प्रासंगिक कथाओं के संयोजन में भी कवि पूर्ण सफल रहा है क्योंकि इन कथाओं से मूल कथा को उत्कर्ष प्राप्त होता है तथा उसमें गति आती है। चारित्रिक विकास के लिये भी इन कथाओं का संयोजन अत्यधिक सफल कहा जा सकता है।

अंजनी माता की भेंट की कथा अवश्य ही मूल प्रवाह से अलग होती हुई दिखाई देती है। इस काण्ड में जो नवीन उद्‌भावना से युक्त एक प्रसंग जोड़ा गया है वह है संजीवनी लाने के लिये श्रीराम के द्वारा अपने वीरों के सामर्थ्य का आह्वान तथा प्रत्येक वीर का अपनी सामर्थ्य एवं शक्ति का परिचय प्रस्तुत करना। इसी प्रकार सुमित्रा स्वप्न वर्णन भी 'रघुवंश दीपक' में एक ऐसा कथा प्रसंग है जो कवि की निजी मौलिकता का द्योतक है।

निष्कर्ष :

१- लंका काण्ड की कथा मूलत: आधिकारिक कथा ही है जिसमें विभिन्न घटनाओं का सांघातिक चित्रण है जिससे उसमें प्रवाह तथा उत्कर्ष दोनों का सफल समायोजन हो सका है।

२- प्रासंगिक कथाओं की योजना में कवि सफल रहा है तथा कथा प्रवाह की स्वाभाविकता की रक्षा कर सका है।

७- उत्तर काण्ड की कथा

उत्तर काण्ड की कथा का प्रारम्भ भरत के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण के से प्रारम्भ होता है। भरत चिंतामग्न राम के अयोध्या न लौटने पर विचार कर रहे हैं क्योंकि वनवास की अवधि समाप्त हो गई है। मन में तर्क वितर्क करते हुये भरत राम के ध्यान में मग्न हैं तभी पवनपुत्र हनुमान, जिन्हें श्रीराम ने सन्देश कहने के लिये भेजा था, वहां पहुंचते हैं।

हनूमान भरत मिलन तथा संवाद । भरत द्वारा सभी परिवार एवं अयोध्या वासियों को राम के विजयी होकर अयोध्या आगमन की सूचना मिलती है। इधर श्रीराम अपने सखाओं को अयोध्या की महिमा बतलाते हैं और तभी उनका पुष्पक विमान अयोध्या में उतरता है। अयोध्या में श्रीराम का वशिष्ठ, भरत तथा पुरवासियों से मिलन तथा पुर प्रवेश वर्णन। सीता जी का अपनी सासुओं से मिलन तथा श्रीराम का माताओं से मिलन व श्रीराम वशिष्ठ संवाद वर्णन। राम राजतिलक की तैयारी तथा राम राज्याभिषेक वर्णन, वेदों द्वारा भगवान श्रीराम की स्तुति, शिव, ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं द्वारा श्रीराम की स्तुति व राम राज्य वर्णन। कुम्भज ऋषि आगमन तथा अश्वमेध यज्ञ की मंत्रणा व रावण, कुम्भकरण तथा विभीषण जन्म कथा, तप, बल, व्याह वर्णन। बहुत से श्याम वर्ण घोड़े प्रकट कर कुम्भज ऋषि को श्रीराम द्वारा अपने प्रभाव को प्रदर्शित करना तथा मुनि द्वारा स्तुति तथा उनकी विदा। श्रीराम वशिष्ठ संवाद तथा वशिष्ठ जी से माया का प्रभाव वर्णन। श्रीराम दिनचर्या तथा भरतादि भाइयों को उपदेश, बानरों की विदाई, हनूमान संवाद, राम सीता संवाद तथा विमानारूढ़ हो विश्व भ्रमण करना, सीता परित्याग तथा वाल्मीकि आश्रम में सीता का आगमन व विलाप, लवणासुर वध प्रसंग तथा शत्रुघ्न विजय वर्णन, लवकुश जन्म कथा। अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ तथा उसके अश्व का वाल्मीकि आश्रम में लव द्वारा बन्धन। लव का राम की सेना से युद्ध तथा उनका मूर्च्छित होना। कुश का युद्ध के लिये आना तथा लव-कुश द्वारा शत्रुघ्न, भरतादि को पराजित कर हनूमानादि का बंधन तथा सीता द्वारा उनको छुड़ाना। श्रीराम का युद्ध के लिये आना तथा वाल्मीकि मिलन व लवकुश को श्रीराम से परिचित कराना। इन्द्र द्वारा अमृत वर्षा तथा सभी मृत वीरों का जीवित होना। सीता राम मिलन तथा अश्वमेध यज्ञ का पूर्ण होना। लव कुश तथा सीता सहित राम का राज्य करना। लक्ष्मण द्वारा अनयार्मिनी भक्ति तथा ज्ञान वैराग्य संबंधी प्रश्न तथा श्रीराम का विस्तार सहित जीव, ब्रह्म, संसार, माया आदि का वर्णन, नवधा भक्ति तथा जीव के उद्धार के उपाय का वर्णन। संत, असंत

सत, रज, तामस धर्म वर्णन । कौशल्या महाप्रयाण तथा सभी पुत्रों को यथा योग्य राज देना। सचिव, प्रजाजन सबको श्रीराम का समझाना तथा वरदान देना, ब्रह्मा का संदेश, दुर्वासा का अवधपुर आगमन, लक्ष्मण का त्याग तथा महाप्रयाण। श्रीराम का प्रजासहित `महा प्रयाण` । कुश द्वारा पुन: अयोध्या को बसाना, कुश विवाह तथा राजतिलक व राज्य वर्णन, अतिथि को राजा बनाना, अवध महात्म्य वर्णन, सरयू जन्म कथा तथा कवि द्वारा ग्रन्थ रचना एवं उसकी समाप्ति स्थल का वर्णन तथा ग्रन्थ समाप्ति ।

समीक्षा :

रघुवंश दीपक की उत्तर काण्ड की कथा का विस्तार देखकर तथा उसमें ग्रन्थ के नायक श्रीराम के महाप्रयाण तक के चरित्र के वर्णन के बाद भी जो कथा मिलती है उससे यह संकेत मिलता है कि कवि ने ग्रन्थ में रघुवंश के दीपक श्रीराम, कुश तथा अतिथि तीन राजाओं के चरित्र को गुम्फित किया है और इस प्रकार उसने महाकवि कालिदास के रघुवंश की भांति ही `रघुवंश दीपक` की रचना करने में सफलता प्राप्त की है। वस्तुत: इस प्रकार वह ग्रन्थ के नाम करण को भी सार्थक बना सका है। हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह लक्ष्य कर चुके हैं कि प्रसिद्ध भारतीय आचार्य - साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ कविराज ने महाकाव्य की कथावस्तु तथा नायक सबंधी लक्षणों का उल्लेख करते हुए कहा है कि `एक वंश भवाभूपा: कुलजा वह वोदिवा`। १ अर्थात् एक ही वंश के एक ही राजा अथवा उस कुल में उत्पन्न बहुत से राजाओं का चरित्र भी महाकाव्य में कथावस्तु के लिये स्वीकार किया जा सकता है। `रघुवंश दीपक` की कथावस्तु में इसीलिए उसके अन्तिम सोपान उत्तर काण्ड में अत्यधिक विस्तार मिलता है। कतिपय प्रासंगिक कथाओं के द्वारा कवि ने अपने बहुउद्देश्यीय ग्रन्थ `रघुवंश दीपक` में ज्ञान, भक्ति, जीव, ब्रह्म, माया आदि आध्यात्मिक तथा दार्शनिक तत्त्व चिन्तन का भी विस्तृत वर्णन किया है जो बीच बीच में रोचकता ही उत्पन्न करते हैं तथा रसात्मक अनुभूति के प्रेरक प्रसंगों के द्वारा उसने शुष्क इतिवृत्तात्मकता को सरस बना दिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

१-साहित्य दर्पण- विश्वनाथ कविराज- परिच्छेद ६ श्लोक ३१६

ने यह कथन ठीक ही है कि इतिवृत्त मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता। उसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिम्बवत् चित्रण होना चाहिए जो हृदय में रसात्मक तरंगे उठाने में समर्थ हो। अत: कवि को कहीं घटना का संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार । १ वस्तुत: उत्तरकाण्ड ही नहीं अपितु सम्पूर्ण ग्रन्थ में कवि ने घटना के संकोच तथा विस्तारमें यही दृष्टिकोण अपनाया है।

'रघुवंश दीपक' की कथावस्तु का आद्योपान्त परिचय तथा आधिकारिक एवं प्रासंगिक कथाओं के समायोजन को लक्ष्य करते समय जो महत्वपूर्ण बात हमें दृष्टिगत होती है वह है उसमें समस्त कार्यावस्थाओं की क्रमिक सम्बद्ध योजना तथा अर्थ प्रकृतियों और नाटकीय पंच संधियों का समुचित समाहार। हमें यह कहने में किंचित संकोच नहीं होता कि सहजराम जी ने 'रघुवंश दीपक' के वस्तु संगठन में काव्य शास्त्र की मान्यताओं का पूर्णत: पालन किया है। बालकाण्ड से आरम्भ होकर 'रघुवंश दीपक' की कथा अयोध्या काण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धा काण्ड तथा सुन्दरकाण्ड में यत्नावस्था को प्राप्त होती है। लंका काण्ड में प्राप्त्याशा की झलक मिलती है और उत्तरकाण्ड केपूर्वार्द्ध में नियताप्ति की अवस्था पर पहुंच कर उसके उत्तरार्द्ध में फलागम की पूर्ण सूचना मिलती है। कवि जिस उद्देश्य से 'रघुवंश दीपक' की रचना करता है उसकी पूर्णतया उपलब्धि उसे उत्तरकाण्ड के उपसंहार में अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से हो जाती है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन केआधार पर हम 'रघुवंश दीपक' के वस्तु संगठन से संबंधित निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं :-

(१) रघुवंश दीपक की कथावस्तु प्रख्यात अथवा अनुत्पाद्य कोटि की है।

(२) उसमें प्रासंगिक कथाओं की भरमार है जिनके अति विस्तृत कलेवर ने आधिकारिक कथावस्तु के स्वाभाविक प्रवाह में बाधा उत्पन्न की है ।

(३) रघुवंश दीपक की आधिकारिक कथावस्तु के चयन में कवि ने एक महदुद्देश्य को सम्मुख रखा है जिसमें घटनाओं के घात प्रतिघात से नायक के सम्पूर्ण चरित्र को उद्घाटित किया गया है तथा सम्पूर्ण रचना को जातीय चेतना तथा संघर्षों की विजय कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

१- जायसी ग्रन्थावली पंचम संस्करण पृष्ठ ६८,६९ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(४) 'रघुवंश दीपक' की आधिकारिक कथावस्तु व्यक्ति प्रधान है।

~~कथा प्रधान कथा का सम्यक विवेचन~~

उपलब्धियां तथा नवीनता

' रघुवंश दीपक ' के वस्तु संगठन में कवि सहजराम जी की उपलब्धियों की चर्चा तथा एतद्विषयक उनके द्वारा की गई नवीन उद्भावनाओं को लक्ष्य करके ही इस अध्याय को पूर्ण करना अधिक उचित होगा। इस प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में हम यथास्थान इस बात की ओर संकेत कर चुके हैं कि 'रघुवंश दीपक ' के उपसंहार की रचना अपनी समस्त पूर्ववर्ती रचनाओं से भिन्नता लिये हुये हैं। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने सीता को भूमि में समाहित होने, आचार्य केशवदास जी ने उससे आगे बढ़कर उन्हें राम के साथ अयोध्या लौटकर अश्वमेघ यज्ञ को पूर्ण करते हुये दिखाकर कथा समाप्त की है। ~~हमारे चर्चित~~ कवि सहजराम जी ने उससे भी आगे बढ़कर सीता को सन्देह राम के साथ विमानारूढ़ हो परमधाम गमन की कथा की योजना की है तथा राम-सीता का नित्य मिलन दिखाकर सम्पूर्ण कथा का पर्यवसान सुखान्त में किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीता परित्याग तथा उसके आगे की कथा संभवतः इसलिये छोड़ दी थी कि आदि कवि के द्वारा वर्णित इस कथा का पर्यवसान दुखान्त में हुआ था जो उनकी प्रकृति के विरुद्ध था। इसी प्रकार रसिक भावना के राम भक्त कवियों ने भी सीता के परित्याग से उत्पन्न वियोगजनित दुख को अपनी माधुर्य भावना के विपरीत पाया और एतद्विषयक कथा प्रसंग को छोड़कर काव्य रचना की। किन्तु माधुर्य भाव के राम भक्त होते हुये भी सहजराम जी ने इस सम्पूर्ण कथा प्रसंग को एक नया मोड़ देकर इस कौशल के साथ प्रस्तुत किया कि कवि कर्म के सफल निर्वाह के साथ साथ वे अपनी भक्ति पद्धति की भी रक्षा कर सके। वस्तुतः राम काव्य परम्परा में यह उनकी महान् उपलब्धि है तथा इस क्षेत्र में उनकी इस नवीन उद्भावना से अनेक सम्भावनाओं के द्वार उन्मुक्त हो सके।